एक साम्राज्य का उत्थान और पतन

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

सवाल 1: चिम्पैंज़ी अफ्रीका में, कंगारु ऑस्ट्रेलिया में और जैगुआर दक्षिण अमेरिका में क्यों पाए जाते हैं?
सवाल 2: विजयनगर साम्राज्य हम्पी में क्यों पनपा और उसका पतन क्यों हुआ?

पहले सवाल का जवाब देने के लिए हम विज्ञान, खासकर जीव विज्ञान का सहारा लेते हैं। क्या हम इनकी मदद से दूसरे सवाल का जवाब भी दे सकते हैं? बैंगलोर व सिरसी के डॉ. के. एन. गणेशैया, डॉ. आर. उमाशंकर और डॉ. आर. वासुदेव का विचार है कि यह संभव है। उनका शोध पत्र करंट साइन्स के 25 जुलाई 2007 के अंक में प्रकाशित हुआ है। मेरी सिफारिश है कि आप इसे ज़रूर पढ़ें। इसके लिए वेबसाइट हैः www.ias.ac.in/currsci/ । इसमें आप जुलाई 25 का अंक खोलें और पृष्ठ 140 को क्लिक करें। यहां मैं उस आलेख से काफी कुछ उद्धरित करूंगा।

विज्ञान की विधि में जवाब तक पहुंचने के लिए तर्क का उपयोग किया जाता है। हम किसी भी समस्या के बारे में अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठी करते हैं, फिर इस जानकारी को एक सुसंगत व प्रासंगिक तरीके से सूत्रबद्ध करते हैं और एक चित्र या मॉडल का निर्माण करते हैं जो सवाल का जवाब दे। यहां किफायत प्रमुख बात होती है।

किफायत का सिद्धांत 14वीं सदी के फ्रांसिस्कन मुनि और तर्कशास्त्री ओकेम के नाम से मशहूर है। इसे *ओकेम्स रेज़र* कहते हैं और इसका तकाज़ा होता है कि किसी भी परिघटना की व्याख्या में कम से कम मान्यताएं ली जाएं और उन सारी मान्यताओं की छंटाई कर दी जाए जिनका उस मॉडल या सिद्धांत द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणी पर कोई असर नहीं पड़ता। सरलतम हल ही सर्वोत्तम हल होता है। विज्ञान का यही तकाज़ा है।

असम्बंधित नहीं

कर्नाटक की उक्त तिकड़ी ने दर्शाया है कि चिम्पैंज़ी का सवाल और विजयनगर का सवाल असम्बंधित नहीं हैं। चिम्पैंज़ी अफ्रीका में और कंगारु ऑस्ट्रेलिया में फैले क्योंकि उनमें यह क्षमता थी कि वे उस प्राकृत वास के संसाधनों का उपयोग अपनी वृद्धि, प्रजनन आदि के लिए अन्य प्रतिस्पर्धी प्रजातियों की अपेक्षा बेहतर कर पाए।

ठीक इसी तरह से किसी साम्राज्य के फैलाव की व्याख्या भी इस आधार पर की जा सकती है कि उसके लोग अपने विकास, समृद्धि और वर्चस्व के लिए वहां के संसाधनों पर कब्जा जमा पाए। जब राज्य सशक्त हो जाता है तो वह व्यापार या युद्ध में फतह के ज़रिए अपने इलाके से बाहर के संसाधनों पर भी कब्जा जमाने लगता है।

विजयनगर साम्राज्य का उदय लगभग 1333 ईस्वीं में हुआ था। यह साम्राज्य आजकल के बेल्लारी ज़िले में होस्पेट के निकट तुंगभद्र नदी के किनारे पनपा था। अगली दो शताब्दियों में यह पूरे दक्कन में फैल गया और फिर मुगलों के आगमन के साथ उतनी ही तेज़ी से 1570 तक समाप्त भी हो गया। इस साम्राज्य के सबसे मशहूर शासक कृष्णदेवराय (1505-40) हुए।

तो यह साम्राज्य इतना वैभवशाली कैसे बना? ऐसा लगता है कि यूरोपीय व्यापारियों के आने से मदद मिली थी - पहले ये व्यापारी इक्का-दुक्का और फिर थोक में आए थे। कैसे? उस ज़माने में किसी भी राज्य की फौजी ताकत घोड़ों और बंदूकों पर निर्भर थी। वास्को डी गामा और अल्बुकर्क जैसे यूरोपीय व्यापारियों और खोजियों के आने से पहले पूरे बाज़ार पर अरबों का एकाधिकार था, और बाज़ार पर बेचने वालों का वर्चस्व था।

यूरोपीय लोग घोड़े लाए और प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर लाए; विजयनगर समुद्र तट के काफी नज़दीक था और उसने इसका फायदा उठाया। कृष्णदेवराय को अधिक-से-अधिक घोड़ों की ज़रूरत होती थी और बताते हैं कि उन्होंने अल्बूकर्क को 20,000 ब्रिटिश पाउण्ड देकर घोड़ों की सप्लाई का

एकाधिकार पाने की कोशिश भी की थी।

और उन्होंने बंदूकें खरीदीं। विजयनगर के राजाओं ने अपने कुदरती संसाधनों का उपयोग यूरोप के लोगों से घोड़े और बंदूकें खरीदने में किया। और ये कुदरती संसाधन क्या थे? चंदन और मसाले। दरअसल, गणेशैया, उमाशंकर और वासुदेव का तर्क है कि विजयनगर साम्राज्य की सरहदें दक्कन में इन संसाधनों की उपलब्धता से तय हुई थीं।

कीमती माल

चंदन की लकड़ी व्यापार हेतु कीमती वस्तु थी और साम्राज्य ने धीरे-धीरे दक्षिणी प्रायद्वीप पर कब्जा जमाया जहां चंदन की लकड़ी के 80 प्रतिशत से अधिक बागान थे। यूरोपीय लोगों के बीच इस वस्तु की मांग इतिहास में दर्ज है। इसी के लिए पुर्तगाली लोग गोवा आए थे और विजयनगर साम्राज्य के साथ व्यापार करते थे। उन्होंने अपनी फौजें दक्षिणी एशिया के टिमोर द्वीप पर भी भेजी थीं जहां चंदन प्रचुरता में मिलता था।

संपत्ति का दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत मसालों, खासकर काली मिर्च, का था। युरोपीय लोगों में इसकी बहुत मांग थी और इस मामले में विजयनगर लाभ की स्थिति में था। इसीलिए उन्होंने पश्चिम की ओर कदम बढ़ाए, वहां के काली मिर्च के बागानों पर कब्जा जमाया और अपनी समृद्धि में इजाफा किया।

चंदन व मसालों के अलावा हीरे-जवाहरात भी थे। कृष्णा व तुंगभद्र नदी के बीच स्थित रायचूर दोआब और निकटस्थ रायलसीमा एक समय पर दुनिया भर में हीरों के एकमात्र स्रोत थे। ज़ाहिर है, विजयनगर साम्राज्य ने इस इलाके पर कब्जा जमाया और नई संपदा व शक्ति प्राप्त की। आगे चलकर जब दक्षिण अफ्रीका और ब्राज़ील में हीरे खोजे गए, तब जाकर व्यापार वहां के ब्रिटिश व पुर्तगाली प्रभुत्व के क्षेत्रों में स्थानांतरित हुआ। वास्तव में विजयनगर साम्राज्य के पतन और गोलकोंडा साम्राज्य की स्थापना के बाद भी लगभग 1750 तक हीरे प्रमुख संपदा बने रहे थे।

विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी में होना भी कोई संयोग नहीं था; हम्पी चंदन, मसालों और हीरों के स्रोत के निकट स्थित था। तो यहां हमें अफ्रीका में चिम्पैंज़ी, दक्षिण अमेरिका में जैगुआर्स और विजयनगर के बीच समानताएं देखने को मिलती हैं - साम्राज्य के स्तर पर डार्विन का जैव विकास का सिद्धांत।

शासकों ने एक दूरगामी कदम सिंचाई व सिंचित खेती के विकास का उठाया था। वास्तव में उन्हें विशेष कृषि क्षेत्र के आविष्कार का श्रेय दिया जाना चाहिए, जहां किसानों को बसाया जाता था, वे खाद्यान्न उगाते थे और साम्राज्य को स्थिरता प्रदान करते थे। तालाब, बंध, बांध और नहरें बनाने में यूरोपीय लोगों की मदद ली गई थी। भूमि व पानी के इस उपयोग से उस समय, काफी छोटे पैमाने पर ही सही, एक हरित क्रांति हुई थी।

1540 से 1580 की छोटी-सी अवधि में साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे? वैसे तो कई कारणों से यह होना ही थाः संसाधनों का अतिदोहन, उपलब्ध संसाधनों पर नियंत्रण गंवाना और समुद्र पार के इलाकों से प्रतिस्पर्धा।

फैलते ब्रिटिश शासन ने चंदन और मसालों का आधिपत्य छीन लिया। शोधकर्ता बताते हैं कि इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जहां यूरोपीय लोगों के आगमन ने साम्राज्य के विकास का ज्वार पैदा किया था वहीं ब्रिटिश शासन की स्थापना ने उसके अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया।

साम्राज्य का यह डार्विनवाद किस हद तक वैध कहा जा सकता है? इसी तरह का एक उदाहरण प्रशांत महासागर के ईस्टर द्वीप का भी है। वहां की स्थानीय आबादी ने अपने प्रमुख संसाधन - जुबिलिया ताड़ के वृक्ष - का खूब दोहन किया। वे इसका उपयोग लगभग हर काम में करते थे - नावें बनाना, इमारती लकड़ी के रूप में वगैरह। वे इसके फलों का उपयोग भोजन के रूप में करते थे। इस सबके चलते ताड़ की उपलब्धता घटती गई। तब उन्होंने भोजन के लिए पक्षियों और छिपकलियों का शिकार करना शुरू किया। ये भी खत्म हो गए। बहुत थोड़े समय में ईस्टर द्वीप की आबादी कई हज़ार से घटकर चंद सैकड़ा रह गई। इस घटनाक्रम से काफी नसीहत ली जा सकती है। मगर वह गीत तो आपको याद होगाः कहां गए सारे फूल...और वे कभी सीखेंगे क्या? ***(स्रोत फीचर्स)***